

अल्लाह पर विश्वास (2 का भाग 2): शरिफ, तौहीद का वपिरीत

रेटगि:

वविरण: ????? (?????????) ?? ??????? ????? (????) ?? ????? ?? ?? ??? ?? ??????? ?? ?? ??? ?? ??? ??
????????? ?????? ?? ?? ?????? ?????????? ?? ??????? ??? ??? ?? ??? ?????? ?? ?????? ?????? ?????????? ????? ??????
????? ?? ?????? ?? ?? ???

श्रेणी: [पाठ](#) , [इस्लामी मान्यताएं](#) , [आस्था के अनुच्छेद](#)

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

आवश्यक शर्तें

·इस्लाम के स्तंभों और आस्था के अनुच्छेदों का परचिय (2 भाग)।

उद्देश्य

·'शरिफ' शब्द का सटीक अर्थ जानना और उसकी गंभीरता को समझना।

·बड़ा और छोटा 'शरिफ' जानना।

·हमारे समाजों में प्रचलति 'शरिफ' के कुछ रूपों को जानना।

अरबी शब्द

·???? - प्रभुत्व, नाम और गुणों के संबंध में और पूजा की जाने के अधिकार में अल्लाह की एकता और विशिष्टता।

·???? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, कया या करने को कहा।

·???? - एक ऐसा शब्द जसिका अर्थ है अल्लाह के साथ भागीदारों को जोड़ना, या अल्लाह के अलावा किसी अन्य को दैवीय बताना, या यह विश्वास करना कि अल्लाह के सवाि किसी अन्य में शक्ति है या वो नुकसान या फायदा पहुंचा सकता है।

•??? - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।

•???? - यह ?? शब्द से बना है जिसका अर्थ है देखना। इस प्रकार ???? शब्द का अर्थ है दखावा, पाखंड और ढोंग। इस्लामकि मायने मे ???? का अर्थ है ऐसे कार्य करना जो अल्लाह के अलावा अन्य को प्रसन्न करने के इरादे से किया जाये।

अरबी शब्द ????? का अर्थ ????? (अल्लाह को एक मानना) के विपरीत है, और बहुदेववाद और मूर्तपूजा के समान। इसका अर्थ है अल्लाह को अन्य देवताओं के साथ जोड़ना। ????? का मतलब है दूसरों को अल्लाह के साथ जोड़ना उस अद्वितीय और विशेष रूप में जिसका उल्लेख कुरआन और सुन्नत में किया गया है।

ऐसा कोई मुद्दा नहीं है जिस पर इस्लाम एकेश्वरवाद (?????) जतिना सख्त है। ईश्वर के साथ किसी को जोड़ना यानि???? सबसे घातक पाप है, सबसे बड़ा उल्लंघन है जिससे स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर की अवहेलना होती है। ????? की अवस्था में मृत्यु से व्यक्ति ईश्वरीय कृपा से स्थायी रूप से दूर हो जाता है:

“नःसिंदेह अल्लाह ये नहीं क्षमा करेगा कि उसका साझी बनाया जाये (अर्थात शरिफ का पाप) और उसके सिवा जसिं चाहे, क्षमा कर देगा।” (कुरआन 4:48)

???? के कई रूप हैं, जिनमें से कुछ के बारे में नीचे चर्चा की जाएगी।

बड़े शरिफ

शरिफ की इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले कार्य क्षमा नहीं किये जाते हैं। जब तक कोई माफ़ी न मांग ले अल्लाह उन्हें माफ नहीं करेगा।

“वास्तव में, अल्लाह शरिफ को माफ नहीं करता है, लेकिन इसके अलावा वह जसिं चाहता है उसे माफ कर देता है”

यह श्रेणी सृष्टि के उद्देश्य के विपरीत है, जैसा कि अल्लाह के कथन में व्यक्त किया गया है:

“और मैंने जनिन् तथा मनुष्य को सिर्फ अपनी पूजा करने के लिए पैदा किया है।” (कुरआन 51:56)

शरिफ की इस श्रेणी में अल्लाह के अलावा या उसके साथ अन्य प्राणियों की पूजा की जाती है। इसका उदाहरण अल्लाह ने क़ुरआन में दिया है:

“और जब वे नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुद्ध करके उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शरिफ करने लगते हैं।” (क़ुरआन 29:65)

क़ुरआन अपने कई छंदों में जोर देता है कि अल्लाह अपनी शक्तियों को किसी भी साथी के साथ साझा नहीं करता है। यह उन लोगों को चेतावनी है जो मानते हैं कि उनकी मूर्तियां उनका भला करेगी, वो मूर्तियों के साथ न्याय के दिन नरक की आग के ईंधन बनेंगे।

बड़े शरिफ में शामिल है झूठे देवता, पैगंबर, स्वर्गदूत, संत, मूर्तियां, अल्लाह के अलावा किसी की भी पूजा करना। ईसाई लोग अल्लाह के पैगंबर यीशु (उन पर शांति हो) से प्रार्थना करते हैं जैसे वे अल्लाह का साझी मानते हैं। कैथोलिक कुछ पूजाएं संतों, स्वर्गदूतों और मैरी के लिए करते हैं, जैसे वे उनका "सम्मान" मानते हैं। इन सभी चीजों को शरिफ माना जाता है।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) से प्रार्थना करना या पवित्र पुरुषों की कब्रों से प्रार्थना करना भी शरिफ माना जाता है।

सरकार या किसी धार्मिक नेता के ऐसे कानून में विश्वास करना जो इस्लाम की स्पष्ट शक्तियों के विपरीत हो शरिफ कहलाता है, जैसा कि अल्लाह कहता है:

“उन्होंने अपने वद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सवि पूज्य बना लिया” (क़ुरआन 9:31)

उन्होंने उनसे सीधे प्रार्थना नहीं की, बल्कि अल्लाह के धर्म में अल्लाह द्वारा बताये गए वैध को नषिदिध और नषिदिध को वैध में बदलने पर उन्हें अल्लाह के अलावा दूसरा प्रभु बना लिया। उन्होंने उन्हें वह अधिकार दिया जो सिर्फ अल्लाह के पास है - ईश्वरीय कानून बनाना।

बड़े शरिफ का एक अन्य रूप किसी भी रचना को अल्लाह के जैसा ईश्वरीय प्रेम करना है।

“कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सवि दूसरों को उसका साझी बनाते हैं और उनसे, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं तथा जो विश्वासी हैं वे अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं...” (क़ुरआन 2:165)

छोटे शरिक

अल्लाह के अलावा किसी और की कसम खाना और सांसारिक लाभ के लिए धार्मिक कार्य करना, जैसे दिखावा करना या किसी के एहसान के लिए कोई कार्य करना, शरिक के दो छोटे रूप हैं। अल्लाह के दूत ने कहा:

“जसि चीज से मैं आप लोगो के लिए सबसे ज्यादा डरता हूं वह है 'छोटा शरिक'। साथियों ने पूछा 'ऐ! अल्लाह के दूत, "छोटा शरिक" क्या है? उन्होंने कहा दिखावा करना, क्योंकि निश्चिंति रूप से पुनरुत्थान के दिन जब लोगों को अपना पुरस्कार मलि रहा होगा, तब अल्लाह उनसे कहेगा 'उसके पास जा जसिके लिए तू भौतिक दुनिया में दिखावा कर रहा था और देख ककिया तुझे उनसे कोई पुरस्कार मलिता है।'” (अहमद, अत-तबरानी, अल-बैहाकी)

एक बार पैगंबर ने घोषणा की:

“ऐ लोगो, छुपे हुए शरिक से सावधान! लोगो ने पूछा, 'अल्लाह के दूत, छुपे हुए शरिक क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'जब कोई व्यक्ति प्रार्थना करने जाता है और अपनी प्रार्थना को सुशोभित करने का प्रयास करता है क्योंकि लोग उसे देख रहे हैं; यह छुपा हुआ शरिक है।'” (इब्न खुजैमाह)

लोगों की प्रशंसा पाने के लिए विभिन्न प्रकार की पूजा के कार्य करना दिखावा (अरबी में रयिा) है। लोगो को प्रभावित करने के लिए धार्मिक कार्य करने से धार्मिक कार्यों के आध्यात्मिक लाभ नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति पर पाप लगता है। कभी-कभी सबसे पवित्र व्यक्ति भी इससे नहीं बचते हैं क्योंकि यह बहुत छुपा हुआ है और इसके पीछे अंतरनिहित प्रेरक शक्ति है। इससे बचने के लिए इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करो कि आप केवल अल्लाह की खुशी के लिए पूजा कर रहे हैं, न कि लोगो की खुशी के लिए।

एक मुसलमान को यह बहुत सावधानी से सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके इरादे शुद्ध हों और जब भी अच्छा काम कर रहा हो तो उसका इरादा शुद्ध रहे। इसे सुनिश्चित करने के लिए इस्लाम में सभी महत्वपूर्ण कार्यों से पहले अल्लाह का नाम लेना बताया जाता है। पैगंबर ने सभी प्राकृतिक आदतों को पूजा के कृत्यों में बदलने और अल्लाह के बारे में जागरूक बनाने के लिए अनौपचारिक प्रार्थनाएं भी निर्धारित की हैं।

प्रतदिनि होने वाले शरिक के उदाहरण

ज्योतषि और राशफिल

कसी व्यक्ति के जन्म के वर्ष के साथ सतारों और नक्षत्रों की स्थिति की तुलना करके भविष्य की भविष्यवाणी करना एक प्रकार का शरिफ है। केवल अल्लाह ही भविष्य जानता है, इसलिए सतारों का अध्ययन करके भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना असंभव है। यह शरिफ का एक रूप है क्योंकि ज्योतषि में विश्वास ज्योतषियों को भविष्य के ज्ञान का श्रेय देता है, इसके अलावा वे सतारों के लिए कुछ शक्तियों का वर्णन करते हैं जिन्हें न तो अल्लाह ने दिया है और न ही वज्जान मानता है।

भविष्यवाणी

हथेलियां पढ़ना, क्रिस्टल बॉल को देखना और भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले अन्य रूप ऊपर दिए गए समान कारणों से शरिफ के रूप हैं।

संख्या 13

शरिफ का एक सामान्य उदाहरण यह विश्वास करना है कि तेरह एक अशुभ संख्या है, विशेष रूप से पश्चिम में, जहां ऊंची इमारतों में तेरहवीं मंजलि नहीं होना असामान्य नहीं है। यह शरिफ है क्योंकि यह केवल एक संख्या को दुर्भाग्य लाने की क्षमता प्रदान करता है!

शुभ या अशुभ जीव

दुनिया के कई हिस्सों में कई सदियों से कुछ जानवरों या वस्तुओं को अच्छे या बुरे भाग्य से जोड़ा जाना एक आम रीति रहा है। उदाहरण के लिए, काली बिल्लियां, मैगपाई (पक्षी), खरगोश के पैर और घोड़े की नाल को सौभाग्य लाने वाला माना जाता है। ये सभी उदाहरण शरिफ हैं क्योंकि इसमें अच्छी या बुरी कस्मत लाने की क्षमता अल्लाह की रचना को दी जाती है।

सभी मुसलमानों को सभी प्रकार के शरिफ से बचना चाहिए, और ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह है कि वे इसके विभिन्न रूपों के बारे में जानें और तौहीद की अवधारणा को अच्छी तरह से समझें। इस्लाम में शरिफ सबसे गंभीर पाप है, जो हत्या और व्यभिचार जैसे अन्य गंभीर पापों से अधिक गंभीर है, क्योंकि यह सिर्फ अल्लाह की पूजा करने के तथ्य के विपरीत है। इसलिए यह सही होगा कि मुसलमान शरिफ से बचने की पूरी कोशिश करें और स्वर्ग के बागों में प्रवेश करने के योग्य बनें।

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/12>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।